झारखण्ड में जनसंख्या एवं पर्यावरण का भौगोलिक विश्लेषण

संदीप कुमार[1] डॉ. हरवीर यादव [2]

[1]शोधार्थी [2]शोध प्रर्यवेक्षक

विभाग:– सामाजिक विज्ञान

सनराइज़ वि"वविद्यालय

अलवर, राजस्थान

ईमेल आईडी:– sandeepsabaiya@gmail.com

सार

झारखण्ड राज्य, भारत में स्थित होने के साथ-साथ अपनी अद्वितीय भौगोलिक स्थिति के चलते पर्यावरण और जनसंख्या के भौगोलिक विश्लेषण का अध्ययन आवश्यक बना है। इस अध्ययन में, हमने झारखण्ड के पर्यावरणीय प्रदूषण, वन्यजीव संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, और जनसंख्या वृद्धि की विशेषताओं को विश्लेषित किया है। झारखण्ड का पर्यावरणीय संकट, जैसे कि वनस्थली नष्टि, जलस्रोतों की कमी, और प्रदूषण की बढ़ती समस्याएँ, उनके आर्थिक और सामाजिक विकास पर सीधा प्रभाव डाल रही हैं। इसके साथ ही, बढ़ती जनसंख्या के साथ शहरीकरण की तेजी भी एक चुनौती है, जिसके परिणामस्वरूप समुद्र स्तर में बढ़त, जलस्रोतों की कमी, और जलवायु परिवर्तन की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इस अध्ययन से हमें यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण और जनसंख्या का भौगोलिक विश्लेषण झारखण्ड के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। सही प्रबंधन और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान संभव है, जिससे समृद्धि और पर्यावरण संरक्षण को संघटित रूप में समन्वित किया जा सकता है।

विषय संकेत:- पर्यावरण ,भौगोलिक विश्लेषण, वन्यजीव संरक्षण, शहरीकरण

परिचय: झारखण्ड में पर्यावरण एवं जनसंख्या का भौगोलिक विश्लेषण

झारखण्ड, भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक राज्य है जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य, धरोहर, और विविधता के लिए प्रसिद्ध है। इसका भौगोलिक विश्लेषण पर्यावरण और जनसंख्या की विकास के पहलुओं को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। झारखण्ड के भौगोलिक स्वरूप में उसकी धरोहर, प्राकृतिक संसाधनों का अद्भुत संग्रह, और जलवायु विविधता शामिल हैं।

इस प्रस्तावना में, हम झारखण्ड राज्य के पर्यावरण और जनसंख्या के भौगोलिक पहलुओं का विश्लेषण करने जा रहे हैं। हम पर्यावरणीय चुनौतियों, बदलते जनसंख्या और शहरीकरण के प्रभाव, वन्यजीव संरक्षण, और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का विश्लेषण करेंगे। हम यह भी देखेंगे कि झारखण्ड के पर्यावरणीय संसाधनों की संरचना और जनसंख्या के परिवर्तन के बीच कैसे एक संबंध हो सकता है और इसका उद्देश्य सुस्त विकास और पर्यावरण सुरक्षा को कैसे संयोजित किया जा सकता है।

2. झारखण्ड की भौगोलिक विशेषताएँ:

झारखण्ड एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और प्राकृतिक धरोहर से भरपूर राज्य है, जो अपनी अद्वितीय भौगोलिक विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। इसका भौगोलिक स्वरूप राज्य की विविधता, सौंदर्य और जलवायु में विविधता को प्रकट करता है।

- **धरोहरीय प्राकृतिक सौंदर्य:** झारखण्ड का भूखंड घने जंगलों से भरा हुआ है, जिनमें विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ और जीवन पाए जाते हैं। महुआ, सल, शीशम, और साल जैसे पेड़-पौधों का अद्भुत संग्रह यहाँ पाया जाता है।
- **शौचालय क्षेत्र:** झारखण्ड का पूर्वी हिस्सा चोटानों से घिरा हुआ है, जो इसे एक प्राकृतिक शौचालय क्षेत्र बनाते हैं। पर्वतीय आवासों, उपास्य पहाड़ों, और प्राकृतिक झीलों का अद्वितीय संग्रह इसके सौंदर्य को बढ़ाता है।
- **नदियाँ और जलवायु:** झारखण्ड के भूभाग में बेहद महत्वपूर्ण नदियाँ जैसे सुबनरिक्हा, खारसावान, कोयल, और दामोदर बहती हैं। ये नदियाँ जलवायु, जलस्रोतों, और जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **वन्यजीव संरक्षण:** झारखण्ड के वन्यजीव संरक्षण क्षेत्र भारतीय वन्यजीव संरक्षण के अद्वितीय हिस्से में आते हैं। बेनेट, पालामू, और हजारीबाग जैसे सुरक्षित क्षेत्र विभिन्न प्रजातियों के वन्यजीवों को आवास प्रदान करते हैं।
- **खनन और खदान:** झारखण्ड का भूगर्भ संसाधन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, और यहाँ खनिज धातुएँ जैसे कि कोल, मिक्स्ड बॉक्साइट, और मिल्ड स्टील आदि प्राप्त की जाती है।

3. पर्यावरणीय चुनौतियाँ:

झारखण्ड का पर्यावरण उसके विकास के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों का संवादनशील निपटान आवश्यक है ताकि समृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

- **वनस्पतियों की कटाई:** झारखण्ड के वनों की कटाई और वनस्पतियों की अत्यधिक उपयोग की वजह से पर्यावरण को बड़ा खतरा हो रहा है। वनों की अपने जीवों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका होने के साथ-साथ, इसका पर्यावरणीय संतुलन पर भी असर पड़ रहा है।
- **खनन और उद्योगीकरण:** खनन और उद्योगीकरण के प्रयासों के चलते झारखण्ड के प्राकृतिक संसाधनों पर असावधानीपूर्वक प्रभाव पड़ रहा है। खनिज संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से पर्यावरण में प्रदूषण, भूमिस्थिति पर प्रभाव, और पानी की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।
- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का झारखण्ड पर भी असर दिखा रहा है। अनियमित मौसम पैटर्न, अधिक तापमान, और अधिक बारिश के परिणामस्वरूप जलवायु संकट और विनाश की संभावना है।
- **जलस्रोतों की प्रदूषण:** नदियों की प्रदूषण विषेश रूप से खनन और उद्योगीकरण के कारण बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप, नदियों का पानी पीने योग्य नहीं रह रहा है और जलजीवन को खतरे में डाल रहा है।
- **बाघ और अन्य जीवों की संरक्षण:** वन्यजीवों के संरक्षण के लिए भी झारखण्ड को महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। बाघ, हाथी, और अन्य जीवों की विभिन्न प्रजातियों को सुरक्षित रखने के लिए संरक्षण कार्यक्रम आवश्यक हैं।

4. जैव विविधता और वन्यजीव संरक्षण:

झारखण्ड एक ऐतिहासिक और प्राकृतिक समृद्धि के साथ भरपूर वन्यजीव संरक्षण क्षेत्रों का घर है। इसका जैव विविधता और वन्यजीव संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान है, लेकिन यह भी चुनौतियों का सामना कर रहा है।

- **वन्यजीव संरक्षण क्षेत्र:** झारखण्ड में वन्यजीव संरक्षण क्षेत्र विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, जैसे कि बेनेट, पालामू, हजारीबाग, और दलमा जैसे क्षेत्र। ये क्षेत्र अनेक प्रजातियों के वन्यजीवों के आवास के रूप में महत्वपूर्ण हैं और उनके संरक्षण के लिए अद्वितीय हैं।
- **जैव विविधता की धरोहर:** झारखण्ड की जैव विविधता उसकी धरोहर है, जिसमें विभिन्न प्रकार की पौधों और पशुओं की अद्वितीयता शामिल है। यहाँ कई प्रजातियों के पेड़-पौधों, पक्षियों, और पशुओं का आवास है जो आजकल खतरे में हैं।

- **वन्यजीव संरक्षण की चुनौतियाँ:** वन्यजीव संरक्षण क्षेत्रों की देखभाल और संरक्षण में चुनौतियाँ भी हैं। वन्यजीवों के संरक्षण के लिए संरक्षण कार्यक्रमों की जरूरत है, जिनमें उनके संरक्षण, आवास सुरक्षा, और जनसंख्या के प्रबंधन के उपाय शामिल हों।
- **वन्यजीव सुरक्षा के प्रयास:** झारखण्ड सरकार ने वन्यजीव संरक्षण के प्रति संवादनशीलता दिखाई है और विभिन्न संरक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। बाघ, एक्सल्टड मेजरिटी अरिया, और अन्य प्रजातियों के संरक्षण के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।
- **समुदाय सहभागिता:** वन्यजीव संरक्षण में स्थानीय समुदायों की सहभागिता महत्वपूर्ण है। उन्हें संरक्षण कार्यक्रमों में शामिल करने और उनके साथ सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

झारखण्ड की जैव विविधता और वन्यजीव संरक्षण क्षेत्र में अद्वितीय संसाधन हैं, जिनकी देखभाल और संरक्षण मानवता की जिम्मेदारी है।

5. जलवायु परिवर्तन और संवेदनशीलताएँ:

झारखण्ड में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और संवेदनशीलताएँ भी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये समस्याएँ पर्यावरण और समाज के विकास पर सीधा प्रभाव डालती हैं।

- **अनियमित मौसम पैटर्न:** झारखण्ड में अनियमित मौसम पैटर्न के प्रभाव से किसानों की किसानी कार्यों में परेशानियाँ हो रही हैं। अधिक बारिश, तापमान की असामान्यता, और अन्य जलवायु संकेत खेती पर असर डाल रहे हैं।
- **जलवायु संकट:** झारखण्ड में जलवायु संकट के प्रभाव बढ़ रहे हैं, जैसे कि अधिक गरमियों की वजह से जलस्रोतों की कमी और पानी की आपूर्ति में कमी।
- **बांध निर्माण के प्रभाव:** बांधों के निर्माण से नदियों का प्रवाह बदल जाता है, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव हो सकते हैं। बांधों के परिणामस्वरूप पानी की आपूर्ति और जलस्रोतों का संवादनशीलता के साथ-साथ समग्र वायरस परिवर्तन में असर डालते हैं।
- **समुद्र स्तर की बढ़त:** जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप समुद्र स्तर में बढ़त दर्ज की जा रही है, जिससे किनारे के क्षेत्रों में समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।
- **प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा:** जलवायु परिवर्तन से प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा पर भी असर पड़ रहा है। वन्यजीव संरक्षण क्षेत्रों में भी यह प्रभाव दिखा रहा है और अनेक प्रजातियों के जीवों को खतरे में डाल रहा है।

- **संवेदनशीलता और जागरूकता:** जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को समझने और इसके साथ-साथ उसकी संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए सामाजिक जागरूकता भी महत्वपूर्ण है।

झारखण्ड में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का संवादनशीलता से सामना करने के लिए संज्ञानात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है, ताकि पर्यावरण और समाज के विकास को संरक्षित रखा जा सके।

6. जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण:

झारखण्ड में जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण के चलते विभिन्न सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। यह प्रक्रिया उत्तराधिकारित विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन की चुनौतियों को भी प्रस्तुत करती है।

- **जनसंख्या वृद्धि:** झारखण्ड में जनसंख्या वृद्धि की दर तेजी से बढ़ रही है, जिससे विभिन्न सामाजिक सेवाओं की मांग बढ़ रही है। इससे जलवायु परिवर्तन, संसाधन की कमी, और नागरिक सुविधाओं की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।
- **शहरीकरण:** झारखण्ड में शहरीकरण की तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण शहरों में बदलाव दिख रहा है। शहरों के विकास के साथ-साथ बचे हुए स्थलों की खतरा भी बढ़ रहा है।
- **जनसंख्या दबाव:** जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप उच्च जनसंख्या दबाव भी बढ़ रहा है। यह किसानों की जमीनों की बेहतर उपयोग के लिए अधिक प्रेरित करता है, जिससे जलवायु परिवर्तन की समस्याओं को भी बढ़ावा मिल सकता है।
- **सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ:** जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ झारखण्ड में सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। बेरोजगारी, गरीबी, शिक्षा की कमी, और स्वास्थ्य सेवाओं की अधिक मांग समस्याओं में बढ़ोतरी कर रही हैं।
- **समुदायों की समस्याएँ:** झारखण्ड में विभिन्न समुदायों की समस्याएँ भी दिख रही हैं, जैसे कि आदिवासी समुदायों की समस्याएँ और उनकी सामाजिक समरसता में बदलाव।
- **शिक्षा और साक्षरता:** बढ़ती जनसंख्या के कारण शिक्षा के क्षेत्र में भी चुनौतियाँ हैं। साक्षरता दर बढ़ाने और उच्च शिक्षा के उपलब्धियों में सुधार की आवश्यकता है।

झारखण्ड में जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण के प्रभावों का सम्वादनशीलता से सामना करने के लिए सामाजिक, आर्थिक, और सांविदानिक कदम उठाने की आवश्यकता है। यह

सामस्याएँ विकास की दिशा में सुरक्षित और स्थायी प्रगति की दिशा में सोचते हुए हल किए जाने चाहिए।

7. सामाजिक-आर्थिक गतिविधियाँ और पर्यावरण:

झारखण्ड में सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों का पर्यावरण पर असर हो रहा है, और इन गतिविधियों के प्रबंधन में सुसंगतता बनाए रखने की आवश्यकता है।

- **खेती और कृषि:** खेती और कृषि झारखण्ड की मुख्य आर्थिक गतिविधियों में से एक है। परंतु अधिक बीजों का प्रयोग, कीटनाशकों की अधिक प्रयोग, और पानी की कमी की वजह से पर्यावरण में असामान्यता आ सकती है।
- **उद्योग और विकास:** उद्योग और विकास की गतिविधियाँ भी पर्यावरण को प्रभावित कर सकती हैं। उद्योगीकरण के प्रयासों के साथ-साथ प्रदूषण और अन्य पर्यावरणीय समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं।
- **राजकीय नीतियाँ:** सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए राजकीय नीतियों का प्रभाव भी पर्यावरण पर होता है। विकास की प्राथमिकता में पर्यावरणीय सुरक्षा को ध्यान में रखने की आवश्यकता है।
- **शिक्षा और जागरूकता:** शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की महत्वपूर्णता को समझाने का प्रयास होना चाहिए। सामाजिक जागरूकता के माध्यम से पर्यावरणीय मुद्दों पर सामाजिक दबाव डाला जा सकता है।
- **संरक्षण कार्यक्रम:** झारखण्ड सरकार के द्वारा संचालित संरक्षण कार्यक्रम भी पर्यावरण की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। वन्यजीव संरक्षण, वनस्पति संरक्षण, और जल संरक्षण के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।
- **सामाजिक समानता:** सामाजिक समानता के माध्यम से भी पर्यावरण की सुरक्षा में सहयोग किया जा सकता है। सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को पर्यावरण के बारे में जागरूक करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

झारखण्ड में सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों के प्रबंधन में पर्यावरण के सुरक्षा को महत्वपूर्ण ध्यान में रखने की आवश्यकता है, ताकि समृद्धि के साथ-साथ पर्यावरण सुरक्षित भी रह सके।

निष्कर्ष:

झारखण्ड में पर्यावरण और जनसंख्या के भौगोलिक विश्लेषण से पता चलता है कि यह एक उद्यमी और संवर्धित राज्य है, लेकिन इसके साथ ही विभिन्न पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, जनसंख्या वृद्धि, और शहरीकरण की प्रक्रिया से आवश्यकता है कि सामाजिक जागरूकता, सामाजिक समानता, और पर्यावरणीय संरक्षण के माध्यम से सुसंगतता और संतुलन बनाए रखा जाए। वन्यजीव संरक्षण, जल संरक्षण, और संरक्षित क्षेत्रों की देखभाल के प्रति ध्यान देने के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक विकास को भी सहयोगिता के साथ आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

संदर्भ:

1. मंदिर, एफ.सी. (1913): नगर नियोजन पर रिपोर्ट, जमशेदपुर, सरकार।
2. अनस्टेड, जे.एफ. (1933): क्षेत्रीय भूगोल की एक प्रणाली, 18 : 175-181
3. वीवर, जी.डी. (1965): भू-आकृतियाँ क्या हैं? व्यावसायिक भूगोलवेत्ता, XVII (01), जनवरी: 11-13
4. डेकेने, आर.बी. (1962): द पैटर्न ऑफ़ सेटलमेंट इन सेंट्रल नयनज़ा, केन्या, ऑस्ट्रेलियन ज्योग्राफर्स, 8 : 180-190
5. मटन, ए.एफ.ए. और ए.ई. एडम्स (1939): दक्षिणी ऑलगन में भू-आकृतियाँ, बस्तियाँ और भूमि उपयोग। आर्थिक भूगोल, 15 : 169-178.
6. रिच, जे.एल. (1917): सांस्कृतिक विशेषताएँ और भौतिक चक्र, भौगोलिक समीक्षाएँ, 4 : 297-308
7. सिंह, ए.के. (2012): सोलन जिला (हि.प्र.): भू-आकृतियों का एक भू-आकृतिक अध्ययन और कृषि एवं बस्तियों के साथ उनका संबंध, अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस वी.बी.एस.पी. विश्वविद्यालय, जौनपुर
8. सिंह, आर.पी. (1961): छोटानागपुर पठार का अनाच्छादन कालक्रम।
9. सिन्हा, वी.एन.पी. (1967): बिहार, भारत में बोकारो बेसिन में जनसंख्या और निपटान, 21. अंतर्राष्ट्रीय भौगोलिक कांग्रेस, चयन पत्र, 3: 256-261
10. स्वेन्सन, एम.बी. (1944) : समरसेट भूगोल में ग्रामीण बस्ती का फैलाव और ढेर, 29 : 1-18
11. वूल्ड्रिज, एस.डब्ल्यू. (1958): भू-आकृति विज्ञान की प्रवृत्ति, ब्रिटिश भूगोलवेत्ताओं का लेनदेन संस्थान, 25 :23-35

12. यादव, एस.आर.एस. (1978): हज़ारीबाग़ पठार: भू-आकृतियों और बस्तियों में एक अध्ययन, अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस बी.एच.यू., वाराणसी (भारत)

13. ज़ेकरज़ेव्स्का, बी. (1967): भू-आकृतियों के भूगोल में रुझान और तरीके: एक समीक्षा लेख। एनल्स एसोसिएशन ऑफ अमेरिकन ज्योग्राफर्स, 57 : 128-165